International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 04(II), October - December, 2021, pp.105-110

# आर्थिक मंदी और मुक्त बाजार

डायालाल सांखला*

**सार**

*आर्थिक मंदी हमेशा से चर्चित विषय रहा है। आर्थिक मंदी से निजात पाने के लिए विभिन्न देश अपने–अपने स्तर पर कई कदम उठा रहे है। मंदी से हर संस्था और हर व्यक्ति किसी न किसी रूप से प्रभावित हो रहा है। मंदी जीडीपी, रोजगार और कारोबार में भारी गिरावट की तरह मंदी इस बात का प्राकृतिक चेतावनी–संकेत हैं कि आर्थिक सुनामी आ रही है। सितंबर 2008 में लीमन ब्रदर्स सहित वॉल स्ट्रीट के अन्य दिग्गज आर्थिक और वित्तीय संस्थाओं के धराशाई होते ही घटाटोप आर्थिक मंदी का दौर शुरू हो गया। इसके सर्वग्रासी प्रभाव से दुनिया का कोई देश बच नहीं सका। पहले इसकी गिरफ्त में अमेरिका, यूरोपीय संघ तथा जापान आए। मुक्त बाजार व्यवस्था में बाजार सरकारी हस्तक्षेप और नियंत्रण से काफी हद तक मुक्त होता है कुछ आवश्यक विनियमनों को छोड़कर सरकार की भूमिका अत्यंत सीमित होती है। बाजार की सत्ता में विश्वास करने वाले आर्थिक सिद्धांतकार बार–बार यह हिदायत देते हैं कि सामाजिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए बाजार को नियंत्रण मुक्त कर देना चाहिए। भूमंडलीकरण और उदारीकरण के साथ मुक्त बाजार के आगमन से न केवल दुनिया की अर्थव्यवस्था में आमूल–चूल बदलाव आया बल्कि उसके हाथों उपभोग और स्थूल आनंद की नई परिभाषा भी गढ़ी गई। नीति निर्माताओं ने मुक्त बाजार और सम्यक विनियमन के बीच संतुलन और बेहतर तालमेल बनाए और रखने की रणनीति अपनाई। मंदी के इस विप्लवकारी समय में भारत की स्थिर अर्थव्यवस्था और सुदृढ़ विकास का आधार यही आर्थिक दृष्टि है।.*

***शब्दकोश:*** *आर्थिक मंदी, मुक्त बाजार, अर्थव्यवस्था, सामाजिक उद्देश्य।*

---

## प्रस्तावना

आर्थिक मंदी हमेशा से चर्चित विषय रहा है। विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्था विश्वव्यापी मंदी से आक्रांत है। इससे निजात पाने के लिए विभिन्न देश अपने–अपने स्तर पर कई कदम उठा रहे है। मंदी से हर संस्था और हर व्यक्ति किसी न किसी रूप से प्रभावित हो रहा है। आर्थिक मंदी से आशय देश भर की आर्थिक गतिविधियों में ऐसी गिरावट कई माह तक चले और जो सामान्तयः सकल घरेलू उत्पाद, वास्तविक व्यक्तिगत आय, कृषोतर रोजगार, औधोगिक उत्पादन तथा थोक और खुदरा बिक्री में कमी के रूप में परिलक्षित हो। ( नेशनल ब्यूरो ऑफ इकॉनामिक रिसर्च, यू.एस.) । आर्थिक संकटों का एक लंबा इतिहास है, 1930 के दशक की आर्थिक महामंदी तो एक भीषण त्रासदी थी। लेकिन, लेटिन अमेरिकी और एशियाई आर्थिक संकट भी किसी दुरूस्वप्न से कम नहीं थे। अर्जेंटीना, मेक्सिको, रूस, तुर्की वगैरह दुनिया के कई मुल्कों ने भी अलग–अलग समय में आर्थिक संकटों का सामना किया है। अभी जिस आर्थिक मंदी की गिरफ्त से विश्व के अनेक देश धीरे–धीरे छूट रहे है। उसकी तुलना अगर की जा सकती है तो सिर्फ 1929 के आर्थिक महामंदी से इसका भी विश्वव्यापी प्रभाव महसूस किया गया है। लेकिन अमेरिका तथा यूरोप इसके केंद्र में रहे। दरअसल पिछली आर्थिक मंदीयां परंपरागत बैंकिंग तथा मुद्रा संकट से

---

[6] सहायक आचार्य, आर्थिक प्रशासन एवं वित्तीय प्रबन्ध, एम.बी.सी. राजकीय कन्या महाविद्यालय, बाड़मेर, राजस्थान।

जुड़ी थी । मौजूदा आर्थिक संकट का सीधा संबंध वित्तीय बाजारों से है। यह एक तथ्य है कि पिछले दशकों के दौरान वित्तीय बाजारों में नवोन्मेषी परन्तु जटिल उत्पादों और सेवाओं के आगमन के कारण अमेरिका के विकास का इंजन काफी हद तक वहां का वित्तीय क्षेत्र बन गया लिहाजा मंदी का सबसे बुरा असर अमेरिका पर ही पड़ा । मंदी का माहौल, नकदी की कमी, मांग में गिरावट, गिरती विकास दर और बाजार की अनिश्चितता आर्थिक महामंदी के कुछ सर्वाधिक नजर आनेवाले पहलू हैं सब–प्राइम ऋणों को चुकाकर्ताओं के छोटे से मुद्दे से शुरू हुआ मामला अब एक वैश्विक चिंता का विषय बन गया है।

**आर्थिक मंदी की प्रथम पदचाप**

आर्थिक गतिविधियां व्यवसाय–चक्र यानी व्यापार चक्र की चार स्थितियों से गुजरती हैं–मंदी यानी रिसेशन, महामंदी यानी डिप्रेशन, समुत्थान यानी रिकवरी और तेजी यानी बूम। जब जीडीपी और रोजगार घट रहे हों, तो अर्थव्यवस्था में मंदी कही जाती है जो गहरी होने पर महामंदी में तब्दील हो जाती है। आम तौर पर वह नौकरियों में छंटनी,बढ़ती बेरोजगारी, फुटकर बिक्री में कमी और आवास एवं कार बाजारों में सुस्ती के रूप में नजर आती है। मंदी जीडीपी, रोजगार और कारोबार में भारी गिरावट की तरह मंदी इस बात का प्राकृतिक चेतावनी–संकेत हैं कि आर्थिक सुनामी आ रही है। विश्वव्यापी आर्थिक मदी की मार का वृत्तांत किसी ट्रेजडी से कम नहीं हैं। एक अभूतपूर्व रंगीनी में खोयी दुनिया पूंजी की समृद्ध सिंफनी डूबकर सुन रही थी कि अचानक बूम के टीलों में विस्फोट होने लगे और वाल स्ट्रीट घने धुआँ से घिर गया। उत्पादन का स्तर गिर गया। लोगों को नौकरियों से निकाला जाने लगा। 'पिक–स्लिप' और 'ले–ऑफ' के साए में बेरोजगारी के कगार पर पहुँच चुके और ऊपर से सिर पर कर्ज का भारी बोझ लिए तमाम लोगों ने तो अपने पूरे परिवार की हत्या करने के बाद खुदकुशी तक कर डाली। सबसे पहली रोचक घटना लीमन ब्रदर्स जैसी दिग्गज वित्तीय संस्था के दिवालिया होने के साथ घटती है। मंदी का वायरस लीमन के खंड़हरों से ही निकला और समूची दुनिया को संक्रमित कर गया। इसके बाद धड़ाधड़ कई संस्थाओं के तुलनापत्रों की चिंदियाँ बिखरने लगी। अमेरिकी सब–प्राइम संकट की परतें खुलने लगी। वहां के हाउसिंग सेक्टर पर सबकी नजरें टिक गई और उसे मंदी को भड़काने वाला घोषित खलनायक माना गया। स्थावर संपदा के बाजार से बहकी आँधी की तरह निकली आर्थिक मंदी के मुख्य कारणों में से एक था – ऐरे गैरे लोगों अर्थात सब प्राइम उधार में उधारकर्ताओं की कर्ज चुकाने की हैसियत, सब प्राइम उधार में सामान्य से दो–तीन प्रतिशतता अंक अधिक ब्याज दर से कर्ज की चुकौती और सब प्राइम उधारकर्ताओं की चूक करने के इतिहास की विशेष भूमिका रही है। 'सूचनाओं के वैषम्य' ने अपनी पारी खेली और अमेरिका का हाउसिंग सेक्टर ताश के पत्तों की तरह भरभराकर गिरने लगा।

सितंबर 2008 में लीमन ब्रदर्स सहित वॉल स्ट्रीट के अन्य दिग्गज आर्थिक और वित्तीय संस्थाओं के धराशाई होते ही घटाटोप आर्थिक मंदी का दौर शुरू हो गया। इसके सर्वग्रासी प्रभाव से दुनिया का कोई देश बच नहीं सका। पहले इसकी गिरफ्त में अमेरिका, यूरोपीय संघ तथा जापान आए। दरअसल यह आर्थिक मंदी अमेरिका के हाउसिंग मार्केट में हुए बड़े पैमाने पर डिफाल्ट के जीवाणु संक्रमण का दुष्परिणाम थी। वहां के इन्वेस्टमेंट बैंक जोखिम को नजरअंदाज कर उधरकर्त्ताओं से पर्याप्त जमानत लिए बिना और कर्ज चुकाने की उनकी हैसियत देखे बिना आकर्षक ब्याज दरों पर उन्हें कर्ज पर कर्ज बांटते गए। स्थावर संपदा सेक्टर इस संकट का मुख्य स्रोत रहा है। साथ ही, इन उधारकर्ताओं को यह सब्जबाग दिखाई जाता रहा कि कर्ज लेकर वे लोग जो घर खरीद रहे हैं उसकी कीमत सिर्फ परवान चढ़ेगी– घटेगी हरगिज नही। वित्तीय इंजीनियरिंग और नवोन्मेषी बैंकिंग के नाम पर इसे पिछले कुछ दशकों में खूब प्रचारित किया गया। ग्राहकों को बंपर फायदों का लालच भी दिया गया। रेटिंग एजेंसीयों ने उनकी अच्छी रेटिंग की। फिर क्या था– निवेशक उनके जाल में फंसते चले गए। उन्होंने ऐसी बंधक आधारित परिसंपत्तियों के जोखिम को जाने बिना उन्हें हाथों–हाथ लिया। निवेश बैंकों ने इस सब–प्राइम चक्र को बार–बार द्वारा है और आखिरकार अनर्थ हो ही गया। इस प्रकार वित्तीय इंजीनियरिंग और वित्तीय क्षेत्र में नवोन्मेषी परिवर्तनों के परिणामस्वरूप वित्तीय उत्पादों की स्लाइसिंग तथा डाइसिंग और उनकी स्ट्रक्चरिंग तथा हेंजिंग और ओरिजिनेटिंग तथा डिस्ट्रीब्यूटिंग से नए प्रकार के जटिल वित्तीय उत्पादों की रचना इस आर्थिक संकट का एक कारण रही है।

## मुक्त बाजार : नफा भी नुकसान भी

मुख्य बाजार का मुक्त कंठ से गुणगान करने वाले मिल्टन फ्रीडमैन तथा फ्रेडरिक हायक जैसे अर्थशास्त्री मानते थे कि मनुष्य की नागरिक तथा राजनीतिक स्वतंत्रता एक आवश्यक शर्त है जिसे केवल मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था में ही हासिल किया जा सकता है। दरअसल फ्रेडरिक हायक का बाजार अर्थव्यवस्था के प्रति नजरिया शुद्ध स्वाधीनतावादी था। वह मानता था कि सामाजिक संसाधनों का बेहतरीन समायोजन या एक स्वतः स्फूर्त व्यवस्था केवल बाजार आधारित अर्थव्यवस्थाओं के भीतर पनप सकती है। हायक 'स्वतः स्फूर्त व्यवस्था' के अपने विचार के लिए इसी से मिलती–जुलती एडम स्मिथ के 'अदृश्य प्रेरणा' की अवधारणा का ऋणी है।

दोनों का मूल स्वर एक है। दोनों की मान्यता हैं कि वैयक्तिक आर्थिक कारोबार के अनुक्रम में एक स्वतः स्फूर्त व्यवस्था स्थापित हो जाती है। इसी से सामाजिक भलाई का मार्ग भी प्रशस्त होता है। हायक के यहां जो स्पांटेनियस आर्डर है एडम स्मिथ के यहां वही इनविजिबल हैंड है। वेल्थ ऑफ नेशन्स के निम्नलिखित उद्धरण पर गौर करने पर साफ जाहिर हो जाता है कि एडम स्मिथ के विचारों में मुक्त बाजार या मुक्त अर्थव्यवस्था के बीज छिपे थेः केवल अपना हित हित साधने वाला व्यक्ति भी एक अदृश्य प्रेरणा से किसी ऐसे लक्ष्य के लिए काम कर जाता है जो उसकी योजना का हिस्सा नहीं रहा हो। उसका यह कृत्य उसकी मूल योजना का हिस्सा ना होने के बावजूद व्यापार व्यापक समाज के लिए हानिकारक नहीं होता है। इस प्रकार व्यक्ति अपने हित के लिए काम करते हुए प्रायः सामाजिक हित का लक्ष्य ज्यादा बेहतर ढंग से पूरा कर रहा होता है, जितना अगर वह वास्तव में करना चाहता तो शायद ना कर पाता। ऐसा उदाहरण कभी नहीं दिखा जब सार्वजनिक हित की भावना से किसी व्यापार में लगे व्यक्तियों द्वारा बहुत अच्छे काम किए हो।

मुक्त बाजार व्यवस्था में बाजार सरकारी हस्तक्षेप और नियंत्रण से काफी हद तक मुक्त होता है कुछ आवश्यक विनियमनों को छोड़कर सरकार की भूमिका अत्यंत सीमित होती है। वह मांग और आपूर्ति की शक्तियों पर बाजारों को स्वतंत्रतापूवर्क विकसित होने के लिए छोड़ देती है। उसका काम केवल सहायक परिस्थितियों का निर्माण करना होता है। सरकारें स्वयं बाजार के बीच में खड़ी होती। मुक्त बाजार की परिभाषा के अनुसार मुक्त बाजार के खिलाड़ी एक दूसरे पर ना तो किसी प्रकार की धौंस जमाते हैं और ना ही एक–दूसरे के संपत्ति अधिकार बलपूर्वक या धोखाधड़ी से छीनते हैं। उनके बीच आर्थिक लेनदेन में कीमत का निर्धारण मांग और आपूर्ति के नियम के आधार पर खरीद–ब्रिकी के बारे में लिए गए सामूहिक निर्णयों से तय होता है। विश्व के सामने एक यक्ष प्रश्न है कि क्या किया जाए कि ऐसे विध्वंसक संकटों की पुनरावृत्ति न हो। क्या इतने विनियतनों के बावजूद ऐसे संकट मंडराते रहेंगे। बाजार से हुए हजारों ट्रिलियन डॉलर के नुकसान से उपजे क्रोध एवं खींझ ने बाजार पर नियंत्रण यानि रेगुलेशन के तहत पुख्ता किया है। लेकिन, यहां भी एक प्रश्न उपस्थित हो जाता है कि क्या केवल व्यापक विनियमन के कोई प्रणाली ऐसे संकटों का पक्का जवाब हो सकती है। आर्थिक चिंतकों का मानना है कि केवल विनियमन नहीं अपितु समष्टि– विवेकपूर्ण दृष्टिकोण से संपन्न एक बेहतर विनियमन की विशेष आवश्यकता है।

## सामाजिक उद्देश्य और मुक्त बाजार

बाजार की सत्ता में विश्वास करने वाले आर्थिक सिद्धांतकार बार–बार यह हिदायत देते हैं कि सामाजिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए बाजार को नियंत्रण मुक्त कर देना चाहिए। दरअसल वर्तमान संकट ने बाजार पर एक अच्छी–खासी बहस छेड़ दी है। वे पिछले तीन– चार दशकों में को विकसित बाजार के महाकाय स्वरूप और इस क्रम में वित्तीय बाजारों से इस बात की विशेष ख्वाहिश रखते हैं कि वे लोगों की बचत को बेहतरीन ढंग से निवेश कर आर्थिक सामाजिक कल्याण का मार्ग प्रस्तुत करेंगे। वित्तीय सुधारों पर संयुक्त राष्ट्र आयोग की चर्चाओं में बाजार के बारे में उछाले गए ऐसे कई दावों की पड़ताल की गई। मसलन, क्या वित्तीय बाजारों के फैलाव ने वित्त को, जिसकी हैसियत एक सेवक की थी, उसे अर्थव्यवस्था और प्रकारान्तर से पूरे समाज का मालिक बना दिया है। बाजार की प्रक्रियाओं के तेवर और उन्हें समझने के लिए अर्थशास्त्रियों द्वारा अपनाए जाने वाले मॉडलों को लेकर बुद्धिजावियों, नीति निर्माताओं और बाजार के खिलाड़ियों के बीच

तीखी बहस छिड़ी हुई है। ये लोग दबी जुबान से मानने लगे कि हैं कि वित्त प्रदाताओं ने निजी जोखिम तथा के सामाजिक जोखिम के बीच जरूर कोई–ना–कोई गड़बड़ तालमेल रखा है। अब सब चीजें जगजाजिर हो जाने के बाद मौजूदा संकट को वॉलस्ट्रीट की भाषा में मुक्त बाजार की कोख से जन्मा ड्रैगन भी कहा जाने लगा है।

**बाजार का तिलिस्म**

भूमंडलीकरण और उदारीकरण के साथ मुक्त बाजार के आगमन से न केवल दुनिया की अर्थव्यवस्था में आमूल–चूल बदलाव आया बल्कि उसके हाथों उपभोग और स्थूल आनंद की नई परिभाषा भी गढ़ी गई। उपभोक्तावाद एक संस्कृति बनता गया। मुनाफा नैतिकता की नई कसौटी और आवारा पूंजी समस्त विलास वैभव की अचूक साधन बन गई। उसकी लंबी परियोजना को देखें तो लगेगा कि यदि सब ऐसे ही चलता रहा तो एक दिन यह दुनिया ही एक कॉरपोरेट में तब्दील हो जायेगी। मुनाफा कमाने वाला कारपोरेट लोगों में बाजार के प्रति ऐसी श्रद्धा जगाने लगा मानो वह अष्ट–सिद्धि–नवनिद्धि का दाता हो। कॉरपोरेट एक मंदिर हो और उसमें पूंजी अधिष्ठित देवी। बाजार में मनुष्य जीवन की हर चीज को एक वस्तु या उत्पाद की तरह हासिल करने के फिराक में रहता है। एक दार्शनिक एरिक फ्रॉम थे जिन्होनें जीवन में प्राप्ति कामना का सिद्धांत दिया था। यह मनुष्य का एक खास आलम होता है। इस आलम में हम सफलता, सुख, प्रेम आदि को अपने से अलग चीज मानकर उन्हें किसी भी कीमत पर हासिल कर लेना चाहते हैं।

**टू बिग टू फेल**

लीमन ब्रदर्स जैसी नामचीन संस्थाओं के खंडहरों से आर्थिक जगत को एक नई विचारधारा या कह लीजिए चर्चा के लिए एक नया मुहावरा हाथ लग गया है। यह हैं –ज्वव ठपह जव थ्पस. इसका सरल अर्थ हैं कि बहुत बड़ी वित्तीय संस्था होगी तो सरकार यह नीति निर्माताओं से बर्बाद नहीं होने देंगे क्योंकि उसका असर वित्तीय बाजारों और क्षेत्रों के अलावा पूरी अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा। इसी सुरक्षा कवच के भीतर ऐसी बड़ी संस्था निजी लाभ के लिए निडर होकर बड़े जोखिम उठाती है। अमेरिका के संदर्भ में कहा जाता है कि वहां के पूंजी बाजारों और डेरिवेटिव बाजार ऋणों की राशि नगण्य है। इसलिए विशाल वित्तीय संस्थाओं के बारे में यह कहा जा सकता है कि वे न केवल इतनी विशाल है कि फेल नहीं हो सकती बल्कि बोस्टन कॉलेज के एडवर्ड केन के शब्दों में वे इतनी दुष्कर भी है कि ना तो फेल हो सकती और ना ही उन्हें बंद किया जा सकता है। इसी को ग्रेशम का वित्तीय संरचना का नियम भी कहा जाता है।

**समाधान**

अब जब इस आर्थिक मंदी की चपेट से दुनिया के बाहर निकलने के संकेत मिलने लगे है– आर्थिक विशेषज्ञों और नीति निर्माताओं का ध्यान संकट से निपटने के बाद अर्थव्यवस्थाओं की बहाली पर केंद्रित हो गया है। इस सम्बन्ध में भारतीय रिजर्व के गवर्नर डॉ. डी. सुब्बाराव का शुड बैंकिंग बी मेड बोरिंग? एन इंडियन पर्सपेक्टिव नामक भाषण पढ़ना ज्ञान वर्धन होगा। उन्होनें इस वित्तीय संकट के बाद समाधान के रूप में नोबेल विजेता अर्थशास्थी पॉल कुर्गमैन के बोरिंग बैंकिंग के विचार और उसके बैंक ऑफ इंग्लैंड के गवर्नर मेर्विन किंग के यूटिलिटी एंड केसिनो तथा भारतीय रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर डॉ वाई.वी.रेड्डी के बैक टू बेसिक्स के विचारों की पड़ताल की है। इन तीनों अर्थशास्त्रियों के विचारों का सार लगभग एक है। अर्थात वर्तमान वित्तीय संकट से निकला स्पष्ट सबक हैं कि बैंक अपनी परंपरागत भूमिका में पुनः लौटें। वे लोगों से जमा राशियां ले और उधार दें। अपने भुगतान और निपटान सेवाओं तक सीमित करें। डॉ.सुब्बाराव का मानना है कि बैंकिंग का परंपरागत स्वरूप निःसंदेह पचास और साठ के दशक के बहुत अनुकूल था। उन्होंने समाधान के लिए अपनी जरूरतों को ध्यान में रखते हुए पीछे देखने के बजाय आगे देखने पर बल दिया है। सचूना प्रौद्यौगिकी तथा नवोन्मेषी बैंकिंग सेवाओं और उत्पादों के आगमन के बाद बैंकिंग सुविधाएं हमारे दहलीज तक पहुंच गई है। अब हमारे लगभग सभी जरूरी लेनदेन, आहरण और भुगतान की जरूरतें साल की किसी भी दिन 24 घंटे में कभी भी पूरी हो जाती है।

विश्व स्तर पर ऐसी संस्थाओं के निर्माण की आवश्यकता महसूस की जा रही है जो नैरो–बैंकिंग की परिधि से बाहर जाकर ग्राहकों, बाजारों तथा अर्थव्यवस्थाओं को समग्र वित्तीय सेवाएं प्रदान करें। इस काम में पिछले कुछ दशकों में अर्जित नवोन्मेषी वित्तीय उपलब्धियों को आधार बनाया जा सकता है, लेकिन अनुभवों से सबक लेकर सुधारों के प्रति भी सचेत रहना होगा।

**नैतिक आयाम**

वित्तीय कारोबार भी ईमानदारी और भरोसे पर टिका है। नकदी की कमी यानी क्रेडिट क्रंच तभी पैदा होता है जब क्रेडिट के लैटिन पर्याय की आत्मा घायल कर दी जाए। लैटिन में शब्द का इस्तेमाल भरोसा ही होता है। इसलिए वित्तीय कारोबार का मूलाधार ही भरोसा है। लेकिन, ब्रिटिश कंपनी निक लिसन, न्यूयार्क स्टॉक एक्सचेंज के पूर्व अध्यक्ष बर्नी मेटॉफ, वाल स्ट्रीट के बड़े घोटालों के सरताज डेनिस लेवाइन के कारनामों, भारत में हाल के सत्यम प्रकरण से दुनियादारी का एक अलग फलसफा सामने आता है जो यह मानता हैं कि वित्तीय व्यवस्था का सीधा अर्थ ही होता है–पैसा कमाना–येन–केन–प्रकारेण । हमारे देश में भी हर्षद मेहताओं, केतन पारीखों और तेलगियों की कमी नहीं है जिन्होंने घपलेबाजी के अपने नयाब तरीकों की बदौलत वित्तीय बाजार और शेयर बाजार में जमकर कमाया– नैतिकता जाए भाड़ में। लूट में अगाध विश्वास करने वाले इस वर्ग के लिए सत्यम–असत्यम में कोई फर्क नहीं । वर्तमान वित्तीय संकट का सबसे दुखद पहलू है कि घोटालों की इस संस्कृति ने बाजार की साख पर बट्टा लगाया है। झूठ और फरेब का पुलिंदा खुलते ही बाजार अचानक अविश्वसनीय हो गया है। आधुनिक पूंजीवादी के गॉडफादर एडम स्मिथ ने भी कभी इतना ऊंचा दर्जा नहीं दिया गया था जो कि उसमें से अनैतिकता की बुआ ने आने लगे।

**निष्कर्ष**

इस मंदी से समाज और अर्थव्यवस्था को भारी क्षति पहुँची है। लेकिन, विडंबना है कि आर्थिक मंदी से पहले बूम के समय ऋण लेकर घी पीने की संस्कृति का प्रचार करने वालों और दोनों हाथों से फायदे बटोरने वाला के चलते ही यह आर्थिक संकट पैदा हुआ और फिर उन्हीं हाथों को लेमन सोशलिज्म के तहत भारी–भरकम बेलआउट का आकर्षक उपहार भी थमाया गया। स्मिथ से लेकर रिकॉर्डो तथा मिल तक शास्त्रीय उदारवाद इस अर्थ में एक क्रांतिकारी विचारधारा रही हैं कि उसमें बड़े जमीदारों तथा व्यापारिक हितों पर करारा प्रहार किया था। इसके विपरीत, आज का एक भद्दा नव उदारवाद उसका अवतार बनकर मुक्त बाजार के विमर्श को विकृत रूप में विशाल कॉरपोरेशन जैसी एक समकालीन संस्था के पक्ष में इस्तेमाल कर रहा है। गौर करने की बात है कि यह कॉरपोरेशन अपनी ताकत और कायदे–कानूनों पुराने समय के स्तर पर पुलिस तंत्र तथा समाजवादी व्यवस्था को याद दिलाता है।

भारत के विशेष संदर्भ में यह विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि भारत सरकार तथा भारतीय रिजर्व बैंक की मुस्तैदी और समय पर लिए गए फैसलों का नतीजा था कि आर्थिक मंदी का बहुत कम असर देश पर पड़ा। जीडीपी कम हुआ। विकास दर नीचे आ गयी। शेयर बाजार ठंडा पड़ गया और निर्यात घट गया। ये भी तथ्य हैं। लेकिन, कुल मिलाकर हमारी स्थिति उतनी खराब नहीं हुई जितनी यूरोप और अमेरिका की हुई। इसे ही कहीं डीकपलिंग तो कहीं इंसुलेशन का गया। विश्व मंच पर भारत की सशक्त उपस्थिति और एक शक्ति के रूप में उनकी बनती छवि विकास के जिन मजबूत स्तंभों के दम पर टिकी हैं उनमें टिकती हैं उनमें बैंकिंग एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। भारत में अर्थव्यवस्था को पूरी तरह बाजार के हवाले नहीं किया गया बल्कि ऐसी नीतियां बनाई गई कि बाजार से अर्थव्यवस्था को गति और गहराई मिले। वह प्रगति और विकास के एजेंडे को आगे बढ़ाने वाली अर्थव्यवस्था बने। भारत के नीति निर्माताओं ने मुक्त बाजार और सम्यक विनियमन के बीच संतुलन और बेहतर तालमेल बनाए और रखने की रणनीति अपनाई। मंदी के इस विप्लवकारी समय में भारत की स्थिर अर्थव्यवस्था और सुदृढ़ विकास का आधार यही आर्थिक दृष्टि है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


1. Patnaik, Prabhat. The Value of Money, Tulia Books, New Delhi, 2008
2. Reserve Bank of India Annual Policy Statement for the Year 2008-09, April. Reserve Bank of India, Mumbai, 2008,
3. Reserve Bank of India, Weekly Statistical Supplement, Reserve Bank of India, Mumbai.
4. https://lawliberty.org/milton-friedman-and-friedrich-hayek-fifty-years-later/
5. https://www.bis.org/review/r091130c.pdf -Duvvuri Subbarao: Should banking be made boring? – an Indian perspective
6. https://economictimes.indiatimes.com/hindi/markets/share-bazaar/11-years-later-the-worlds-still-living-in-the-lehman-shadow/articleshow/71181428.cms
7. https://navbharattimes.indiatimes.com/opinion/editorial/trade-war-and-fall-in-prices/articleshow/65880386.cms
8. Bear, Stearns & Company, Recession scenario for 2008, December 18, 2007.
9. Anand Vinod, The Present-Day economic scenario in India-II, March, 2009.


❖◆❖